वर्ष - 1 धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका अंक - 3

चहकती चेतना

जून-अगस्त 2007

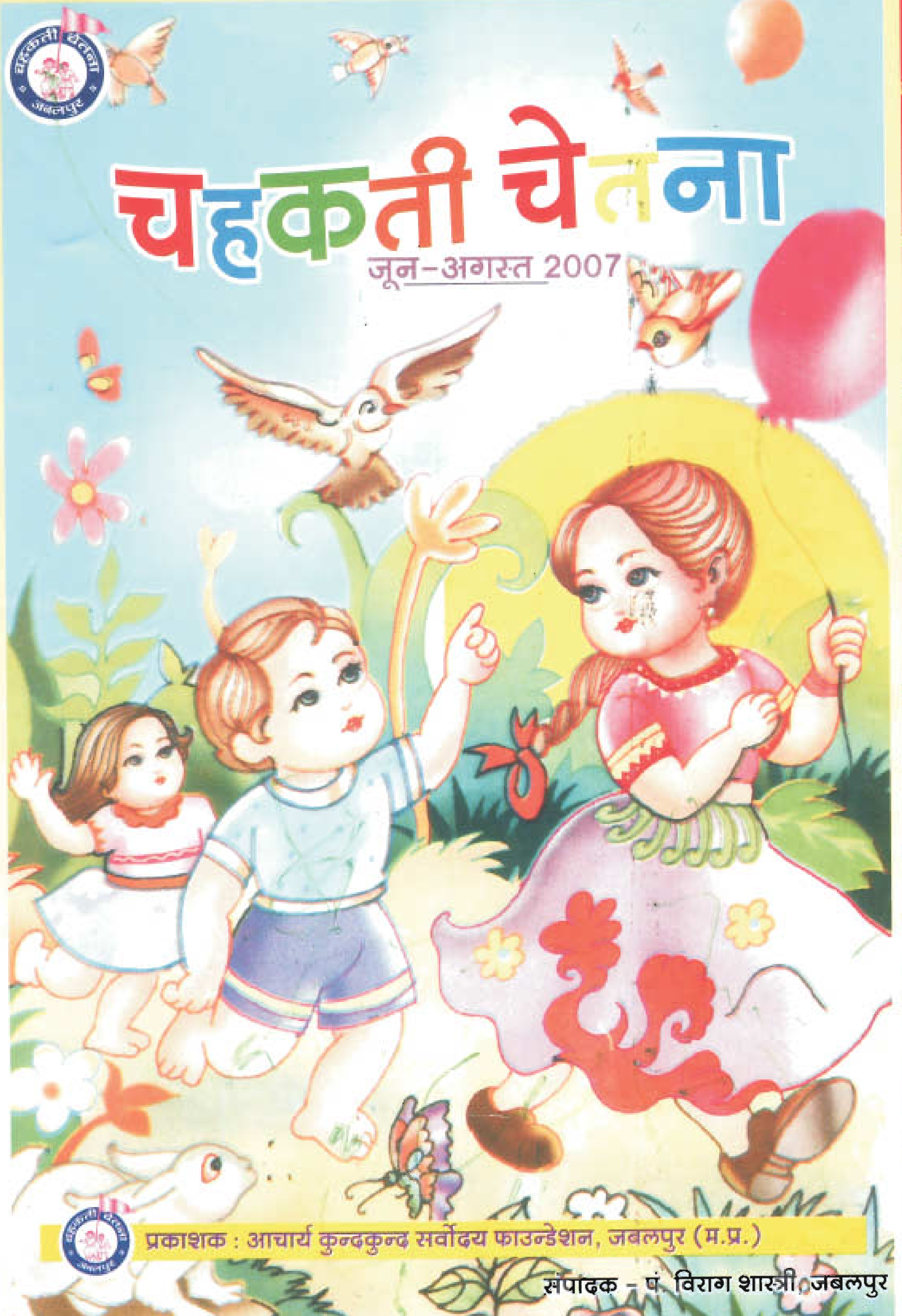

प्रकाशक : आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

संपादक - पं. विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रतिज्ञा

हस्तिनापुर नगर में महारथ नामक सेठ रहता था। वह जैन धर्म का महान भक्त था। उसकी मनोवती नाम की अत्यन्त सुंदर गुणवान और बुद्धिमान पुत्री थी। सोलह वर्ष की उम्र में उसका विवाह वल्लभीपुर के सेठ सोमदत्त के पुत्र बुधसेन से तय हो गया और धूमधाम से बुधसेन और मनोवती की सगाई हो गयी। कुछ दिन के बाद हस्तिनापुर नगर में जिनधर मुनिराज का आगमन हुआ। मुनिराज की शांत मुद्रा से प्रभावित होकर मनोवती ने कहा - हे मुनिराज मुझे कोई ऐसा नियम दीजिए जिससे मेरा जन्म सफल हो जाये। मुनिराज ने मनोवती को आशीर्वाद देते हुए कहा- सुनो पुत्री ! जिनेन्द्र दर्शन के बिना जीवन धिक्कार है। जिनधर्म के प्रेमी को दिन में एक बार जिनदर्शन अवश्य करना चाहिए। जिनदर्शन के बिना मनुष्य पशु के समान है। मुनिराज के वचन सुनकर मनोवती ने विनयपूर्वक कहा - हे मुनिवर ! मैं आज से प्रतिज्ञा लेती हूँ कि मैं जिनेन्द्र भगवान का दर्शन पूजन करके ही भोजन करुँगी और रोज गजमोती चढ़ाऊँगी। मनोवती के घर में गजमोती का भंडार था और वह मनोवती अत्यन्त मूल्यवान गजमोती चढ़ाकर भगवान जिनेन्द्र के दर्शन पूजन कर भोजन ग्रहण करती थी।

कुछ समय के पश्चात् मनोवती का विवाह सम्पन्न हो गया। वल्लभीपुर पहुँचकर मनोवती के ससुर ने विवाह के उपलक्ष्य में साधर्मियों को भोजन के लिए आमंत्रित किया परंतु मनोवती ने भोजन नहीं किया। उसने सोचा मेरी प्रतिज्ञा तो अभी पूरी ही नहीं हुई और यहाँ गजमोती कहीं दिखाई नहीं पड़ते। इस तरह से मनोवती ने तीन दिन तक भोजन नहीं किया। मनोवती को भूखा देखकर सारे परिवार ने भोजन का त्याग कर दिया और मनोवती के पिता को सूचना भेजी। सूचना पाकर मनोवती का भाई आया और पूछा-कहो बहन मनोवती तुमने तीन दिन से भोजन क्यों नहीं किया। मनोवती ने मुनिराज से लिये नियम की याद दिलाई। मनोवती का नियम सुनकर मनोवती के ससुर प्रसन्न हो गये और बोले - बेटी तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया ! अपने घर में भी गजमोती का भंडार है। ये तो हमारा महान सौभाग्य है कि हमें तुम जैसी जिनभक्त बहू मिली और मनोवती ने उत्तम वस्त्र पहनकर गजमोती चढ़ाकर जिनेन्द्र प्रभु का दर्शन किया और पूजन की।

इस तरह से मनोवती की प्रतिज्ञा पूरी हुई।

सच्ची दोस्ती

(नाटक)

- विनय ओ विनय।
- (उदास मन से) क्या है आगम।
- क्या बात है तुम तीन दिन से स्कूल नहीं आये ? क्या तुम्हारा स्वास्थ्य खराब है ?
- नहीं ऐसी कोई बात नहीं।
- तो फिर क्या बात है, क्या घर में कुछ प्रॉब्लम है ?
- कैसे बताऊँ यार आगम ! (विनय ने संकोच से कहा)
- क्या तुम मुझे अपना दोस्त नहीं समझते ? दोस्त ही दोस्त के काम आता है। जो दोस्त संकट में साथ न दे वह दोस्त ही क्या ? (आगम ने समझाते हुए कहा)
- आगम ! मैं दो माह से स्कूल की फीस नहीं दे पाया। मेरे पिताजी का व्यापार ठीक नहीं चल रहा और मैडम ने कहा है कि यदि अब फीस नहीं आई तो अगले वर्ष स्कूल से निकाल दिया जायेगा।
- हाँ विनय ! ये तो चिंता की बात है पर यार तू चिंता मत कर, मैं कुछ व्यवस्था कर दूंगा।
- पर तुम कहाँ से व्यवस्था करोगे ?
- अरे मेरे पापा ने स्कूल पिकनिक के लिए रुपये दिये हैं और कुछ रुपये मैंने जोड़कर रखे थे साइकिल लाने के लिए।
- तो क्या तुम पिकनिक नहीं जाओगे ?
- अरे पिकनिक से ज्यादा तुम्हारी पढ़ाई महत्वपूर्ण है।
- नहीं आगम मैं तुम्हारे रुपये नहीं ले सकता, यह सही नहीं है। (विनय ने जोर देकर कहा)
- क्या मेरा पिकनिक पर जाना, मौज मस्ती करना, खाना पीना यही सही है और तुम पढ़ाई न करो, यह सही है ? अरे यार ! पिकनिक और घूमना तो कभी भी हो सकता है पर तुम्हारी पढ़ाई बार-बार नहीं हो सकती, तुम्हें ये रुपये लेने ही होंगे।
- पर आगम.......
- (बीच में रोककर) पर कुछ नहीं। मेरे पापा भी यह जानकर खुश होंगे कि मैंने रुपयों का सदुपयोग एक अच्छे काम में किया है।
- वाह आगम ! दोस्त हो तो तुम्हारे जैसा।

उत्तर- उलट पुलट पहेली

(1) समयसार (2) जिनालय

(3) भगवान (4) अक्षत

(5) चेतना

प्रेरणा

बढ़े चलो बढ़े चलो बढ़े चलो बढ़े चलो ।
मोक्ष मार्ग प्राप्त कर बढ़े चलो बढ़े चलो ॥
सामने पहाड़ हो सिंह की दहाड़ हो,
सत्य धर्म साथ हो क्यों किसी की हार हो ।
वीतराग मार्ग पर चले चलो चले चलो ॥1॥
नन्हें मुन्ने वीर हम धर्म को बढ़ायेंगे,
धर्म है ये वीर का हम वीर बन जायेंगे ।
सत्य न्याय मार्ग पर चले चलो चले चलो ॥ 2 ॥
संकटों में शांति समता साहस के साथ चल ,
श्री जिनेन्द्र को नमन, पाया अपना आत्म बल।
वंदना हो सिद्ध की कर्म को दले चलो ॥ 3॥

चलो चलें प्रभु दर्शन को

समवशरण में श्री जिनदेव देते हैं हमको उपदेश,
चूहा भी आया बिल्ली भी आई प्रभु दर्शन को पायेंगे
शेर भी आया गाय भी आई प्रभु वाणी को पायेगें
देव भी आये मुनि भी आये जिनवर को देखा हरषाये
प्रभु की मंगल वाणी सुनकर सम्यग्दर्शन पायेंगे
समवशरण में ......

हमारे आराध्य नवदेव

अरिहंत

सिद्ध

उपाध्याय

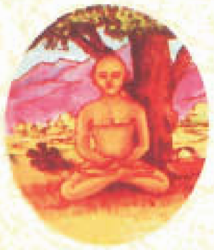

साधु

3. आचार्य परमेष्ठी

सर्व प्रकार के परिग्रह से रहित आत्मा का अनुभव करने वाले मुनिराज संघ के नायक आचार्य कहलाते हैं।

जैसे विद्यालय में प्रिंसिपल छात्रों और अध्यापकों को निर्देश देते हैं,समस्त व्यवस्था देखते हैं वैसे ही आचार्य भी अपने संघ के अन्य मुनिराजों को दीक्षा देना, गलती होने पर प्रायश्चित (सजा) देना एवं अन्य आवश्यक निर्देश देते हैं। योग्य जीवों को उनकी भावना जानकर दीक्षा देते हैं।

An Acharya is the leader of the monks (SADHUS). He himself strictly practices the teachings of the religion and make other monks to follow such practices. He is a propagator of ethico-spiritual values.

जिनवाणी

जिनबिम्ब

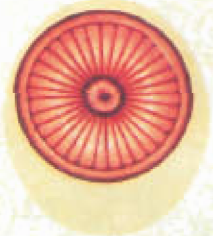

जिनधर्म

जिनालय

सीख

जीवन निर्माण के सूत्र

- स्वयं को जानने का दृढ़ संकल्प।
- देव - गुरू और धर्म के प्रति समर्पण।
- आवश्यक वस्तुओं का ही संग्रह।
- पुस्तकीय ज्ञान के साथ विवेक जागृति।
- प्रतिकूल परिस्थितियों में मानसिक संतुलन।
- संकट में धैर्य से रहना समय पर सदुपयोग।
- छोटों से प्रेम, समान उम्र वालों से स्नेह,बड़ों का आदर।
- एकाग्रता से किया गया हर कार्य साधना है।
- जीवन का हर क्षण स्वर्णिम अवसर है।
- जब भी सोचो, पूर्ण निश्चय और विश्वास से सोचो।
- आज का काम कल पर छोड़ना असफलता है।
- स्वयं की भूलों को सरलता से स्वीकारना साधना का प्रथम चरण है।
- हम अनन्त शक्ति सम्पन्न हैं। केवल आत्म विश्वास और सतत् अभ्यास की जरूरत है।

बीतने वाली घडी को कौन लौटा पायेगा।
इस धरा पर इस धरा का सब धरा रह जायेगा॥
जिंदगी भर का कमाया साथ में क्या जायेगा।
यह सुअवसर खो दिया जो अंत में पछतायेगा॥

उत्तर - बताओ तो जानो :
1.सारस 2. खरगोश
3. हिरन 4. हाथी
5. मछली 6. ऊंट

✲ हमारे तीर्थक्षेत्र : सिद्धक्षेत्र गिरनार

इस स्तंभ के अंतर्गत अब पढ़िये गिरनारजी के बारे में। इसके पूर्व में आप सम्मेद शिखर और पावापुर के बारे में पढ़ चुके हैं।

गुजरात प्रांत के जूनागढ़ जिले में स्थित गिरनारजी परम पावन सिद्ध क्षेत्र है। यह गिरनारजी जूनागढ़ से 7 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यहाँ से हमारे बाइसवें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथजी ने निर्वाण प्राप्त किया। साथ ही यहाँ भगवान नेमिनाथजी का केवलज्ञान कल्याणक भी हुआ था। यहीं गिरनार की भूमि पर आचार्य धरसेनजी ने अपने शिष्य भूतबली मुनिराज और पुष्पदंत मुनिराज को पढ़ाया। बाद में इन्हीं शिष्यों ने षट्खण्डागम ग्रंथ की रचना की और जिस दिन ग्रंथ की रचना पूर्ण हुई थी उस दिन को श्रुत पंचमी पर्व के रूप में मनाया जाता है।

गिरनार जी में पाँच पहाड़ हैं तथा पहाड़ पर एक जिन मंदिर और चरण हैं। गिरनारजी सिद्ध क्षेत्र से सोनगढ़ 200 किमी., पालीताणा 230 किमी., सोमनाथ मंदिर 100 किमी. की दूरी पर स्थित है। इस परम पवित्र सिद्ध क्षेत्र की वंदना हमें अवश्य करना चाहिए।

सही स्वस्तिक चिन्ह कौन सा है ?

उत्तर

चित्र में रंग भरिये

Colour the picture

कविता

हो जाओ बच्चो अब तैयार

हो जाओ बच्चो अब तैयार
खुले स्कूल आई बहार
स्कूल प्रतिदिन जाना है,
खूब पढ़ाई करना है
मंदिर रोज ही जाना है,
जिन दर्शन नित करना है
करना आतम से अब प्यार
हो जाओ बच्चो अब तैयार
गाली-झूठ कभी न देना
झगड़ा चुगली कभी न करना
जिनवाणी को नहीं भुलाना
करना बड़ों का नित सत्कार
हो जाओ बच्चो अब तैयार।

- विराग शास्त्री, जबलपुर

एक थे मेंढक फूल लिये...

एक थे मेंढक फूल लिये,
कुँआ किनारे सोच रहे।
प्रभु दर्शन को जाना है,
फुदक-फुदक कर निकल पड़े।
नर नारी सब जाते थे,
बच्चे भी मुस्काते थे।
हाथी ऊपर बैठकर
राजाजी इक जाते थे।
कोई न देखे भीड़ में
मेंढक दब गया भीड़ में।
प्रभु पूजा के भाव से,
मेंढक पहुँचा स्वर्ग में।
समवशरण में आयकर,
वीर प्रभु के सामने।
राजा जी से पहले आया,
सम्यग्दर्शन उसने पाया।

चेतन राजा कहाँ गये थे...

चेतन राजा कहाँ गये थे, देह में छुप के सो रहे थे।
चार गति में रो रहे थे, मोक्ष में जाकर हँस रहे थे॥
मंदिर जी में आना तुम, परमातम निज ध्याना तुम।
मुनि बन जंगल जाना तुम , मोक्षपुरी में जाना तुम॥

-बा.ब्र. पं.श्री सुमतप्रकाशजी

हमारे मुनिराज

(1) दिगम्बर जैन मुनिराज नग्न होते हैं।

(2) मुनिराजों के पास जीव रक्षा के लिए पिछी और शुद्धि के लिए कमण्डल होता है और वे अध्ययन के लिए शास्त्र भी रख सकते हैं।

(3) मुनिराज के मात्र दो मुख्य कार्य होते हैं आत्मध्यान करना और आत्मा के बारे में चिंतन करना।

(4) मुनिराज दिन में एक बार खड़े-खड़े अंजुलि में नीरस आहार लेते हैं इसके अलावा वे कभी किसी प्रकार का आहार नहीं लेते।

(5) मुनिराज कम सोते हैं और एक करवट में भूमि पर सोते हैं। यदि वे रात्रि में करवट लेंगे तो हो सकता है सोने में जीव हिंसा हो जाये।

(6) मुनिराज अपने सिर के बाल और दाड़ी मूंछ के बाल अपने हाथों से तोड़ते हैं उसे केश लोंच कहा जाता है। मुनिराज स्नान, मंजन नहीं करते।

(7) मुनिराज सभी प्रकार की हिंसा के त्यागी होते हैं। जिस कार्य में हिंसा हो ऐसा कार्य मुनिराज न करते हैं न करवाते हैं। गमन करते समय चार हाथ आगे की भूमि देखकर चलते हैं जिससे जीव हिंसा न हो।

(8) मुनिराजों को चलते फिरते सिद्ध कहा जाता है।

(9) मुनि हुये बिना मोक्ष असभंव है।

धर्माराधना का पर्व

दशलक्षण पर्व

क्षमा - अरी तृष्णा सजधज कर कहाँ चली जा रही हो ?

तृष्णा - अरे क्षमा तुम ! मैं तो शापिंग करने जा रही हूँ।

क्षमा - अभी न शादी का मौसम है, न कोई त्यौहार फिर शापिंग क्यों ?

तृष्णा - अरे भगवान ! जैसे तुझे पता ही नहीं है।

क्षमा - तो तू बता दे।

तृष्णा - अरे सितम्बर से दशलक्षण महापर्व शुरु हो रहे हैं अब इतने बड़े पर्व पर पुरानी साड़ियां पहनना शोभा देता है क्या ? नहीं न, इसलिए कुछ साड़ियां, नई डिजाइन के जेवर और थोड़ा मेकअप सामान ले आऊँ।

क्षमा - बड़ा आश्चर्य है !संयम और सादगी के महापर्व को तुम श्रृंगार महोत्सव समझ रही हो ?

तृष्णा - बस-बस ! अपना उपदेश अपने पास ही रखो।

क्षमा -बात उपदेश की नहीं है तृष्णा, वास्तविकता की है। जैनधर्म के पर्व राग, रंग और भोग के नहीं अपितु संयम और आत्म आराधना के होते हैं। ये दस दिन तो विशेष रूप से गृहस्थ और आरंभकार्यों में कमी कर विशेष आत्म आराधना के हैं।

तृष्णा - तो फिर कोई श्रृंगार ही नहीं करेगा ?

क्षमा - श्रृंगार तो नारी का आभूषण है, परन्तु ऐसा श्रृंगार भी क्या करना जिससे स्वयं के साथ -साथ दूसरों के परिणाम विचलित हों, इससे तो शील में दोष लगता है और देह से भिन्न आत्मा के इस पर्व में देह का श्रृंगार ! कितना पागलपन है यदि इस मंगलपर्व में भी हमारे विषय भोगों में कभी नहीं आई तो शादी-विवाह, होली, दीवाली के समान ही यह महापर्व भी हो जायेगा।

तृष्णा - अच्छा तू बता क्या करूँ ?

क्षमा -अरे करना नहीं है। कर्त्तृत्व छोड़ना है। मंदिर में पंडितजी आ रहे हैं। दिन में तीन समय उनके प्रवचनों का लाभ लेना और अधिक समय तत्त्वचर्चा और आत्म चिंतन में बिताना रोज जिनपूजन करना।

तृष्णा - लेकिन प्रवचन रात में होंगे तो मेरा फेवरेट टी. वी. सीरियल छूट जायेगा।

क्षमा -अरे तू भी गजब करती है। पर्व के दिनो में टी. वी. देखकर ज्यादा पाप कमायेगी क्या ? महापर्व के दिनों में इन सबका त्याग होना चाहिए एवं अपना उपयोग स्वाध्याय में लगाना चाहिए। देह की संभाल नहीं, आत्मा की संभाल करना चाहिए।

तृष्णा - वाह क्षमा तुमने तो मुझे पर्व की महानता का अहसास करा दिया।

क्षमा - तो चलें मंदिर।

तृष्णा - अभी क्यों ?

क्षमा - आज विधान की तैयारी और पूजन व स्वाध्याय की पुस्तकें निकालना है ताकि सबको लाभ मिल सके।

तृष्णा - हाँ हाँ चलो ये तो जिनधर्म की सेवा है।

विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रेरक प्रसंग

एक बार श्वेताम्बर साधु हरिभद्र सूरि अकबर के दरबार में उपदेश दे रहे थे कि एक चिड़िया अचानक आकर उनके हाथ पर आकर बैठ गई। कुछ देर बैठने के बाद वह उड़ गई। दूसरी बार फिर कंधे पर कुछ देर बैठकर फिर उड़ गई। तीसरी बार सिर पर बैठकर उड़ गई। बादशाह ने कहा - मुनिजी! आपके ऊपर यह चिड़िया क्यों आकर बैठ जाती है, किन्तु मेरे पास क्यों नही आती? मुनि ने कहा - जो उन्हें प्यार करेंगे, उन्हीं के पास तो आयेगी। अकबर ने कहा कि - मुनिजी! मैं भी इनसे प्यार करना सीखना चाहता हूँ, अब मैं किसी भी प्राणी की हत्या नहीं करुंगा। दूसरे दिन वही चिड़िया आकर बादशाह के पास आकर बैठ गई। यह देख सभी ने अहिंसा का प्रभाव स्वीकार किया। बादशाह ने पर्व के दिनों में कसाईखाने बन्द रखने की आज्ञा दे दी। बादशाह अकबर की आज्ञा का पत्र आज भी उपलब्ध है।

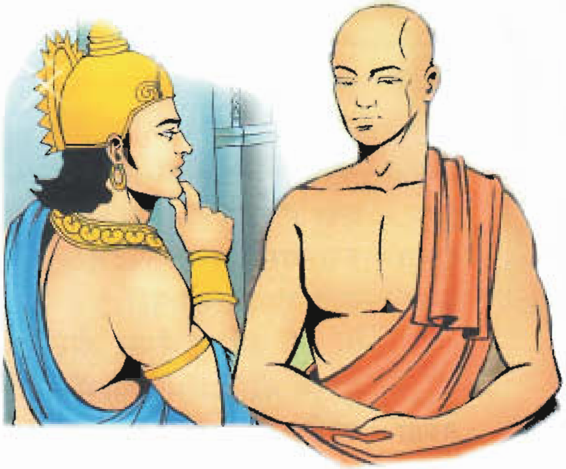

प्रसिद्ध विदेशी लेखक टॉलस्टॉय अपनी सादगी के लिये बहुत प्रसिद्ध थे। उनकी पुस्तकों से प्रभावित होकर एक बार एक व्यक्ति उनसे मिलने पहुँचा और अंदर जाकर देखा एक व्यक्ति जूते पॉलिश कर रहा था। उससे पूछा कि टॉलस्टाय कहाँ हैं मुझे उनसे मिलना है। पालिश करने वाला बोला - आप बैठिये। कुछ देर बाद वही व्यक्ति हाथ पैर धोकर साफ कपड़े पहनकर पहुँचा और मेहमान से बोला - कहिये क्या काम है? मैं ही टॉलस्टॉय हूँ। मेहमान टॉलस्टाय की सादगी और विनम्रता देखकर आश्चर्य चकित रह गया।

बात उस समय की है जब लालबहादुर शास्त्री भारत के प्रधानमंत्री थे। वे बहुत ईमानदार और देशभक्त थे। एक बार उन्होंने अपने नौकर से कहा कि बच्चों को स्कूल छोड़ आओ। नौकर ने सरकारी गाड़ी में बच्चों को स्कूल छोड़ दिया। जब शास्त्रीजी को यह मालूम हुआ कि नौकर ने सरकारी गाड़ी का उपयोग किया है तो उन्होंने अपने नौकर को बहुत डांटा और कहा कि अभी मैं प्रधानमंत्री हूँ और कुछ साल बाद यह पद छोड़ना पड़ेगा। मैं अपने बच्चों को वह सुविधायें नहीं देना चाहता जो सुविधायें मैं प्रधानमंत्री पद छोड़ने के बाद न दे पाऊं।

-श्रेयांस शास्त्री, जबलपुर

सही + जोड़ी बनाईये

नीचे तीर्थंकरों के कुछ नाम दिये गये हैं उन तीर्थंकरों के सामने उनके चिन्ह सही नं. लिखिए। आप पहले पढ़ चुके हैं कि तीर्थंकर प्रभु के जन्म के समय उनके दायें पैर के अंगूठे में एक चिन्ह बना होता है जिसे देखकर सौधर्म इन्द्र उनके चिन्ह की घोषणा करता है तो बताईये सही चिन्ह का नं.

चिन्ह व नम्बर

वासुपूज्यजी - ....
अजितनाथ जी - ....
श्रेयांसनाथजी -........
शांतिनाथ जी - ....
पार्श्वनाथजी - ....
अभिनंदननाथ जी -........
संभवनाथजी - ....

1. सर्प

3. गेंडा

4. बन्दर

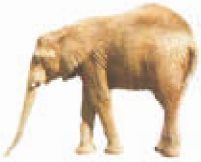

5. हाथी

6. सिंह

7. घोड़ा

चौबीस लक्षण प्रभुजी के मंगलकारी जान,
चैतन्य चिन्ह आत्मा का सच्चा वोही मान।
चेतन-लक्षण जान के कर आतम पहचान,
आत्मस्वरूप को जानकर पा ले केवलज्ञान ।।

सर्वोदय जन्म दिवस उपहार योजना

नाम :........................ पिता का नाम ....
जन्मतिथि.................. पता ....
....
फोन नं. .... मो. ....
पिन कोड..............

1 वर्षीय सदस्यता राशि 150/-

150/- रु. के साथ यह फार्म भरकर भेजिये और पाइये अपने जन्म-दिवस के धार्मिक शुभ कामनाओं के साथ आकर्षक उपहार बालगीत सी.डी. एवं सुंदर ग्रीटिंग

हमारा पता - सर्वोदय, 702 जैन टेलीकॉम, फूटाताल-जबलपुर (म.प्र.)

वात्सल्य की महिमा

संकलन ॥ श्रीमती स्वस्ति जैन

✤ रक्षाबंधन की कथा

बात उज्जैन नगर की है। तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ के समय में आचार्य अकम्पन और उनके 700 मुनियों का संघ उज्जैन में आया। उस समय उज्जैन नगर के राजा श्रीवर्मा अपने चार मंत्रियों के साथ मुनिराज के दर्शन करने के लिए गये। बलि, नमुचि, प्रहलाद, बृहस्पति मंत्रियों को जैन धर्म की श्रद्धा बिल्कुल नहीं थी। मुनिराजों को मौन देखकर मंत्रियों ने मुनिराजों की निंदा करते हुए कहा- मुनिराज तो मूर्ख हैं। लौटते समय मंत्रियों का संघ के ही एक मुनि श्रुतसागर से विवाद हो गया। श्रुतसागर मुनिराज ने उन मंत्रियों को चुप करा दिया। मंत्रियों ने अपने अपमान का बदला लेने के लिए रात्रि में ध्यान में लीन श्रुतसागर मुनिराज को तलवार से मारने का प्रयास किया परंतु उनके हाथ स्थिर हो गये। राजा ने मंत्रियों के अपराध को सुनकर उन्हें देश से बाहर निकाल दिया। वे चारों मंत्री अपनी चालाकी से हस्तिनापुर के राजा के मंत्री बन गये और कुछ समय बाद आचार्य अकम्पन आदि सात सौ मुनि विहार करते हुए हस्तिनापुर पहुँचे। उन चारों मंत्रियों ने मुनिराजों से बदला लेने का विचार किया। उन्होंने राजा से एक पुराना वचन मांगा। वचन में सात दिन के लिए राज्य मांगा। राज्य पाकर मंत्रियों ने मुनिराजों पर अत्याचार करना प्रारंभ कर दिये। चारों ओर से हड्डियाँ, मांस, घास और लकड़ी के ढेर लगाकर आग लगा दी परंतु मुनिराज आत्मध्यान में लीन रहे।

यह उपसर्ग देखकर एक क्षुल्लक मुनिराज ने विष्णुकुमार मुनिराज से संकट दूर करने का निवेदन किया। विष्णुकुमार मुनिराज ने अपना पद छोड़कर अपनी ऋद्धि से वामन (नाटा आदमी) का रूप धारण कर लिया और बलि राजा के पास जाकर तीन कदम जमीन मांगी। राजा बलि ने कहा - आप अपनी इच्छा अनुसार तीन कदम भूमि नापकर ले लें। राजा का आदेश पाकर विष्णु कुमार ने अपनी शक्ति (विक्रिया ऋद्धि) से विशाल रूप धारण कर लिया और दो कदम में ही पूरी धरती नाप दी और तीसरा कदम बलि के सिर पर रख दिया। यह देखकर पूरे नगर में हलचल हो गयी और बलि आदि चारों मंत्रियों ने क्षमा मांगकर जैन धर्म स्वीकार कर लिया। विष्णुकुमार मुनिराज ने प्रायश्चित कर पुनः मुनिदीक्षा ली।

मुनिराज की रक्षा का दिन होने से इस दिन को रक्षाबंधन पर्व के रूप में मनाया जाने लगा। हमें रक्षाबंधन के दिन आचार्य अकम्पन मुनि आदि सात सौ मुनिराजों का स्मरण कर उनकी पूजन करना चाहिए।

अब नहीं मांगूँगी

भक्ति रोज नियम से मंदिर जाती थी पर उसे नहीं पता था कि मंदिर क्यों जाना चाहिए ? मंदिर जाने से क्या लाभ है ? मम्मी ने कहा था कि रोज मंदिर जाना चाहिए । भक्ति पढ़ाई में बहुत लापरवाह थी । खेलती ज्यादा और पढ़ती कम । परीक्षा का समय नजदीक आया तो उसे डर लगने लगा । परीक्षा वाले दिन वह मंदिर गई और जिनेन्द्र भगवान के सामने खड़ी होकर बोली - हे भगवान ! मैंने बिल्कुल पढ़ाई नहीं की । मुझे बहुत डर लग रहा है यदि मैं फेल हो जाऊंगी तो मम्मी मुझे बहुत मारेगी । प्लीज भगवान मुझे पास कर देना यदि आपने पास नहीं करवाया तो मैं कभी आपके पास नहीं आऊंगी । भक्ति की मम्मी भी पीछे से सब सुन रही थी उसने तुरन्त भक्ति को अपने पास बुलाया और प्रेम से पूछा - भक्ति ये क्या कर रही हो ? भक्ति बोली - भगवान को पास करवाने के लिये बोल रही थी ।

पागल कहीं की ! मम्मी ने प्यार से कहा भगवान तो वीतरागी होते है किसी राग द्वेष नहीं करते, किसी का अच्छा-बुरा नहीं करते । किसी का अच्छा बुरा होना तो उसके कर्म के आधीन है । जैसा कर्म करोगे वैसा फल पाओगे तुम कुछ नहीं पढ़ोगी, पेपर में कुछ नहीं लिखोगी तो तुम निश्चित ही फेल हो जाओगी । इसलिए तुम्हे स्वयं ही पढ़ाई करना होगी । जिनेन्द्र भगवान का दर्शन तो मन की शांति के लिये पाप से बचने के लिये और उनसे प्रेरणा प्राप्त करने के लिये किया जाता है । भक्ति बोली मां मुझे तो मालूम ही नहीं था । अब मैं भगवान से कुछ नहीं मांगूगी ।

-विराग शास्त्री

तीर्थंकर परमात्मा के अतिशय सुंदर अष्ट प्रतिहार्य होते है :

कल्पवृक्ष

पुष्पवृष्टि

दुन्दुभि

आसन

ऊँकार ध्वनि

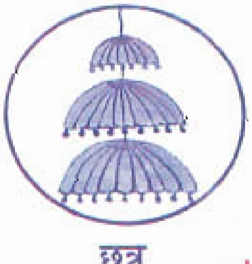
छत्र

चमर

भामण्डल

जिनदर्शन हम रोज करेंगे

श्रावक के छह कर्त्तव्य अर्थात् छह कार्य बताये गये हैं-

(1) देवपूजा (2) गुरूउपासना
(3) स्वाध्याय (4) संयम
(5) तप (6) दान

हमें इन छह कार्यों को रोज करना चाहिए। जैन व्यक्ति के मुख्य लक्षण कहे गये हैं। जिनसे जैन व्यक्ति की पहचान होती है।

(1) प्रतिदिन जिनदर्शन
(2) जमीकंद (आलू, प्याज आदि) का त्याग
(3) पानी छानकर पीना
(4) रात्रि भोजन का त्याग

इनमें से पहला लक्षण है रोज जिनेन्द्र भगवान के दर्शन करना चाहिए । भगवान जिनेन्द्र जिनधर्म के आधार हैं। हमारे जीवन का लक्ष्य आत्मा का सुख प्राप्त करना है और भगवान जिनेन्द्र ने आत्मा का पूर्ण सुख प्राप्त किया है इसलिए वे हमारे आदर्श हैं।

हमारे जिनेन्द्र प्रभु वीतरागी और सर्वज्ञ होते हैं। उनकी मुद्रा के दर्शन कर अपूर्व शांति का अनुभव होता है। कहा है -

जब चिंते तब सहस फल,
लक्खा फल गमनेय।
कोड़ा कोड़ी अनंत फल,
जब जिनवर दरशे।।

जिनवर प्रभु के दर्शन के विकल्प के मात्र से हजार उपवास, जिनवर प्रभु के दर्शन के लिए गमन करने से लाख उपवास, एवं जिनवर के दर्शन करने से करोड़ो करोड़ो उपवास का फल मिलता है।

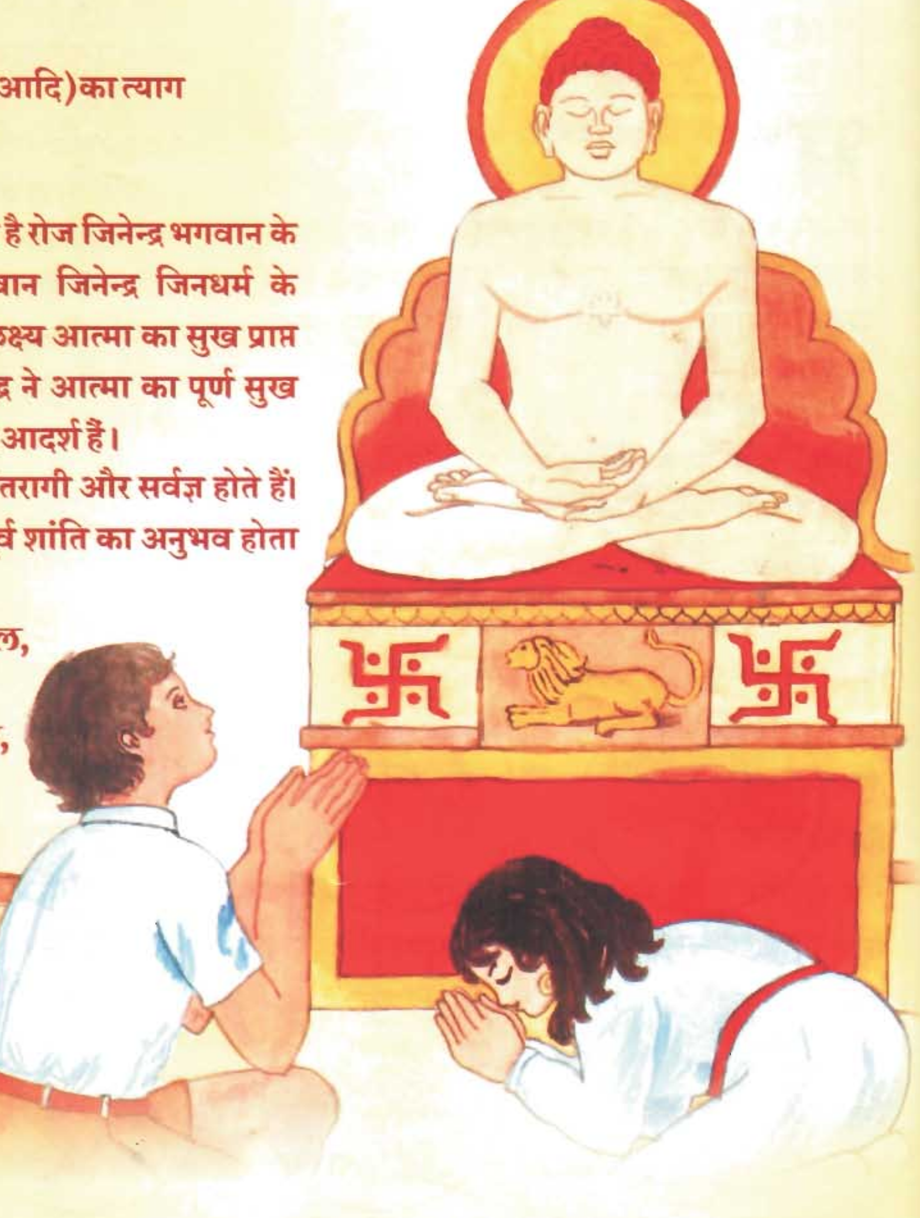

जिनदर्शन करने की विधि:- हमें प्रात: काल स्नान कर साफ कपड़े पहनकर चाँवल लेकर जिन मंदिर जाना चाहिए। जिनमंदिर के बाहर द्वार पर पानी से पैर धोना चाहिए। जिनमंदिर में प्रवेश करते समय नि:सहि नि:सहि नि:सहि बोलना चाहिए । भगवान की वेदी के सामने ॐ जय जय जय नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु, णमोकार मंत्र चत्तारि मंगलम् पाठ विनय से पढ़ना चाहिए और भगवान को विधिपूर्वक प्रणाम करना चाहिए । इसके पश्चात् जिनेन्द्र प्रभु की भक्ति और गुणों को बताने वाला भजन,पाठ, स्तुति, पूजन पढ़ना चाहिए तथा वेदी की तीन परिक्रमा लगाना चाहिए।

इसके बाद शांतिपूर्वक नौ बार णमोकार मंत्र पढ़ना चाहिए और पुन: प्रणाम करना चाहिए।

तो बच्चों आप भी नियम लीजिए कि हम रोज जिनमंदिर जायेंगे । यदि आप किसी कारण से सुबह मंदिर नहीं जा पाते तो शाम को जाइये पर दिन में एक बार मंदिर अवश्य जाना।

पाना नहीं जीवन को
बदलना है साधना।
धुयें सा जीवन व्यर्थ है
जलना है साधना ॥

(1) सतना म.प्र. निवासी 15 वर्षीय शुभांशु जैन बचपन से ही संगीत के रसिक है। इनकी आवाज अत्यन्त मधुर है। श्री राजेन्द्र जैन और मनीषा जैन के सुपुत्र शुभांशु को जिला स्तर पर गायन में अनेक पुरस्कार मिल चुके है। इन्हें मध्य प्रदेश स्तर पर आयोजित राष्ट्रीय गायन स्पर्धा में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। शुभांशु लौकिक गीतो के अलावा जैन धर्म के अनेक सुंदर भजन भी गाता है।

चहकती चेतना परिवार द्वारा शुभांशु को उज्ञवल भविष्य की शुभकानाएँ

(2) 16 वर्षीय राहुल जैन श्री राजेश जैन के सुपुत्र है। राहुल को चित्र कला में महारथ हासिल है। विद्यालय और संस्थाओं के अनेक पुरस्कार के अलावा प्रांत स्तर पर राहुल को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। नशा मुक्ति युवा फेडरेशन द्वारा राहुल को विशेष आवार्ड से सम्मानित किया गया।

चहकती चेतना परिवार द्वारा राहुल को उज्ञवल भविष्य की शुभकानाएँ

उल्टे पुल्टे अक्षरों से सही शब्द बनाओ

जैसे - म त ा अ	-	आतम
स य म ा र स	-	
य ज ि न ल ा	-	
ग व ा न भ	-	
त क्ष अ	-	
त ा न ` च	-	

चित्र देखो- कहानी लिखो

Look this Picture & Write Story

इस चित्र को ध्यान से देखें और एक सुंदर सी कहानी लिखकर भेजें। ध्यान रहे कहानी मौलिक (स्वयं के द्वारा लिखी हुई) धार्मिक, जैन सिद्धांतों की या किसी शिक्षा को बताने वाली होना चाहिए। शब्द सीमा अधिकतम 150 हो। कहानी सुंदर लिखावट अथवा टाइप की हुई (हिन्दी,अंग्रेजी या गुजराती) में होना चाहिए। सर्वोत्कृष्ट कहानी को पत्रिका में प्रकाशित किया जाएगा एवं उसे पुरुस्कृत किया जायेगा।

अंतिम तिथि - 25 जुलाई 2007

हमारा पता है
कहानी विभाग, सर्वोदय 702, जैन टेलीकॉम
फूटाताल, जबलपुर (म.प्र.)

ये है पुरुस्कृत कहानी

करुणा को पशु-पक्षियों से बहुत प्यार था। वह किसी भी पशु-पक्षी पर अत्याचार या उनका दुःख नहीं देख सकती थी। यदि किसी जीव को संकट में देखती तो तुरंत उसकी सहायता करने तैयार रहती थी। उसका छोटा भाई विप्लव पशुओं से बहुत डरता था। उसे लगता था कि वे जानवर उसे नुकसान पहुँचायेंगे।

एक दिन विप्लव ने एक बिल्ली को अपने घर में देखा और देखकर घबड़ा गया। उसे लगा कि बिल्ली उसे पंजा मारेगी। यह देखकर विप्लव डंडे से उसे मारने लगा। यह देखकर करुणा दौड़कर आई और विप्लव से डंडा छीन लिया और विप्लव को समझाते हुये बोली - देखो विप्लव यदि तुम किसी जीव को नुकसान नहीं पहुँचाओगे तो वह भी तुम्हें नुकसान नहीं देगा। इसलिए डरने की कोई बात नहीं। जीवों से प्यार करोगे तो वे भी तुम्हें प्यार करेंगे। उस दिन से विप्लव जीवों से प्यार करने लगा।

★ सम जैन, पीपलदरा (म.प्र.)

पिछले अंक में हमने आपको इस चित्र के आधार पर कहानी लिखने की प्रेरणा दी थी। उसके जवाब में अनेक बच्चों ने कहानियाँ लिखकर भेजीं।

इनकी कहानियाँ भी सराहनीय रहीं -

1. चिन्मय जैन, दिल्ली
2. रेखा जैन, मुगलसराय
3. सानिध्य जैन, अहमदाबाद

CHEHAKTI CHETNA TIME TABLE

आध्यात्मिक,
तात्विक,
धार्मिक,
नैतिक
एवं जैनधर्म की
जानकारी से
परिपूर्ण
बाल एवं युवा
वर्ग की
सम्पूर्ण पत्रिका

MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT

चहकती चेतना

कहानी,
कविता,
गीत,
पहेली,
खेल,
माथापच्ची,
चित्रकथायें,
ड्राईंग,
प्रेरक प्रसंग

प्रकाशक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउण्डेशन (रजि.)
सर्वोदय - 702, जैन टेलीकाम,
फूटाताल, जबलपुर 482002 (म.प्र.)

बनिये अपनी
चहेती पत्रिका
चहकती चेतना
के सदस्य सदस्यता
राशि 250/- 3 वर्ष

संपर्क सूत्र
9827343205, 9300642434
(0761)2651224, 94243 74855
email : chehakti_chetna@yahoo.com

इन्हें भी जानिए

शाकाहारी:-

1. चलते समय आवाज होती है।
2. नाखून चपटे होते है और दांत भी चपटे होते है।
3. खींच के पानी पीते हैं।
4. इनकी आंते मांसाहारी जीव की अपेक्षा लंबी होती है।

मांसाहारी

1. उनके गद्देदार पैर होते हैं जिससे कूदते और चलते समय आवाज नहीं होती।
2. नाखून और दांत नुकीले होते हैं ताकि शिकार को फाड़कर खा सकें।
3. जीभ से पानी पीते हैं।
4. आंते छोटी होती हैं ताकि मांस जल्दी बाहर हो जाये।

शुद्ध आहार - शाकाहार

मनुष्य स्वभाव से शाकाहारी प्राणी है अतः उसकी शारीरिक संरचना ऊपर दी गई शाकाहारी पशुओं की शरीर रचना से मिलती है। आत्म हित के इच्छुक प्राणी को मांस का सेवन कभी स्वप्न में भी नहीं करना चाहिये। -

सुधा पाटनी, छिंदवाड़ा

शीर्षक बताईये

सिद्धांत का प्रतिदिन देवदर्शन और अभिषेक पूजन का नियम था। वह प्रतिदिन समय पर मंदिर जाता और जिनेन्द्र भगवान का प्रक्षाल कर पूजन करता था। उसे यह कार्य करते 7 वर्ष बीत गये।

एक दिन सिद्धांत जब मंदिर जा रहा था। तो रास्ते में एक बूढ़ा व्यक्ति पत्थर की ठोकर से नीचे गिर पड़ा, उसे खून निकल रहा था। सिद्धांत ने उसे देखा तो तुंरत उसे उठाकर अस्पताल ले गया और उसकी दवा करवाई फिर उसे सुरक्षित उसके घर पर छोड़ कर आने लगा तो बूढ़ा व्यक्ति बोला - सिद्धांत मैं तुम्हें जानता हूँ। आज मेरी बजह से तुम्हारा पूजन प्रक्षाल छूट गया। तो सिद्धांत ने कहा -दादाजी आपकी मदद न करता तो क्या करता ? पूजन करने के नियम का यह मतलब नहीं है कि करुणा दया आदि भूल जाना। जिनधर्म को हमें करुणा, दया , मैत्री, शांति आदि करना सिखलाता है। यही वास्तविक पूजन है। यह सुनकर बूढ़े व्यक्ति ने उसे बहुत आशीर्वाद दिया।

प्रस्तुत कहानी का उपयुक्त शीर्षक अधिकतम चार शब्दों में लिख कर हमें भेजें। उचित शीर्षक वाले बालक को पुरस्कृत किया जायेगा।
अंतिम तिथि - 25 जुलाई 2007

छोटी परन्तु काम की बातें :

अहिंसा ही परम धर्म है, जिओ और जीने दो हमारा मूल मंत्र है।

हमारे दैनिक जीवन में हम अनेक कार्य करते हैं और हमारी लापरवाही से अनजाने में ही जीव हिंसा होती रहती है। यदि हम सावधानी से कार्य करें तो सहज में ही अनावश्यक हिंसा से बच सकते हैं।

इन्हें ध्यान से पढ़िये और जीव हिंसा से बचिये -

(1) नहाने के लिए पानी उतना ही गर्म करें जितना गर्म हमें उपयोग करना है। गर्म पानी में ठंडा पानी मिलाने से असंख्यात एकेन्द्रिय जीवों का घात होता है।

(2) गर्म पानी को नाली में न फेकें।

(3) गर्म दाल, सब्जी आदि के बरतन रखते समय नीचे स्टेन्ड अवश्य लगायें।

(4) भोजन एक जगह बैठकर करें। इधर-उधर घूमते हुए भोजन करते समय भोजन के दानें गिर जाते हैं जिससे चीटी लग जाती हैं।

(5) जूठे बर्तन जल्दी साफ कर लें अधिक समय तक बर्तन रखे रहने पर उसमें जीव पैदा हो जाते हैं।

(6) यात्रा आदि पर जाते समय पानी को अच्छी तरह उबालकर ठंडा कर लें जिससे रास्ते में छानने की समस्या से बच जायेंगे।

जैनधर्म की ए, बी, सी

1. मुझे आपका मार्ग अच्छा लगा
सुविधिनाथ भगवान आप मेरे हैं
मैं अपनी गल्तियों को भूल जाऊंगा
मेरे दुःखों का भार मुझे ही हटाना है।

2. दुःखों से भरा संसार बहुत ही तप रहा है
ऐसे शीतल जल का स्रोत मुझे कहां मिलेगा
इस जलते हुए संसार से मुझे बाहर निकलना है
क्योंकि शीतलनाथ भगवान आप वैसे ही हैं जैसा
आपका नाम है।

3. अंधेरी रात है और सफर बहुत लंबा है
ऐसे में श्रेयांसनाथ भगवान का ही भजन गाता हूँ
भजन गाने से मेरा सफर अच्छा हो जायेगा,
भगवान आप मेरी मुक्ति सीट रिजर्व करें।

4. आप दया के सागर हैं
वासुपूज्य स्वामी से मैं प्रार्थना करता हूँ
जो ताला मेरे मुक्ति द्वार पर है,
भगवान आप मुझे उसकी मास्टर चाबी दे दीजिए।

ABC of Jain Dharama

1. I love your way .
SUVIDHINATH swami is mine.
I will forget my mistek.
my burden i had to take.

2. Burning word is too much.
where toget cold water.
puse me? out of burning flame
SHEETALNATH your same as name.

3. Night is dark and journey long
SHREYANSH (NATH) sing your name.
singing makes my journey sweet
Reserve me a mukti seat.

4. You are ocean of merey
Give me lovely master key
can you see on my door.
VASUPJYA SWAMI I aboe.
I lovely your way.

Education Quotes

- Education is the best porvision for old age.
- Education begins a gentleman, conversation completes him.
- Education has for its object the formation of character.
- Education's purpose is to replace an empty mind with an open one.
- Education is the ability to listen to almost anything without losing your temper or your self-confidence.

दिमागी कसरत

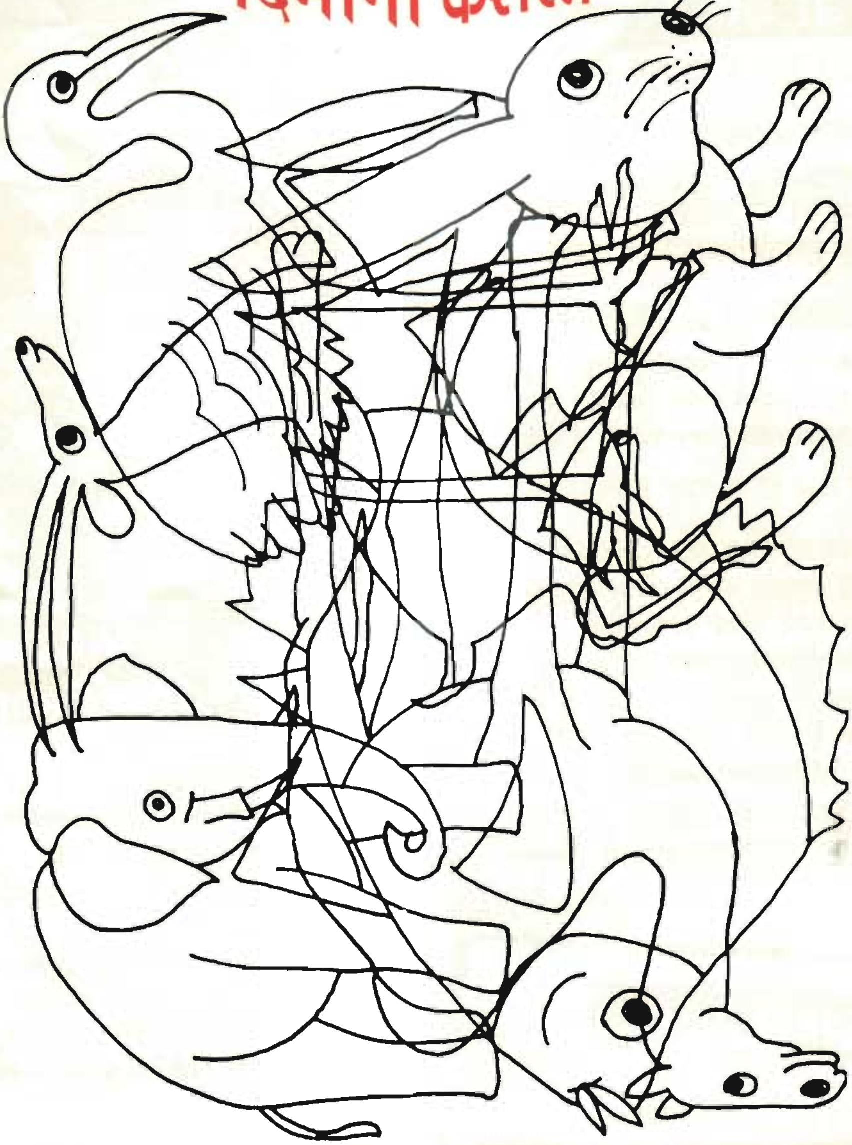

छुपे हुये जीवों के नाम बतायें ....

....

शाकाहारी कितने .... मासांहारी कितने ....

श्रेयस जैन, उज्जैन

अनुभव जैन, इंदौर

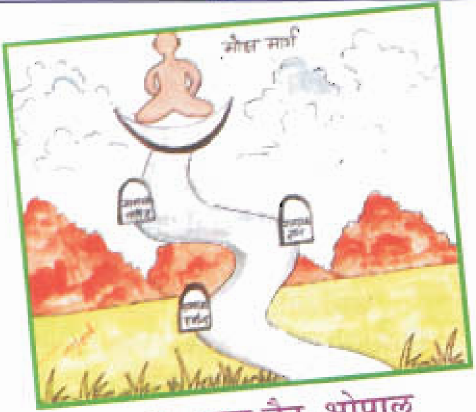

कु. पूजा जैन, भोपाल

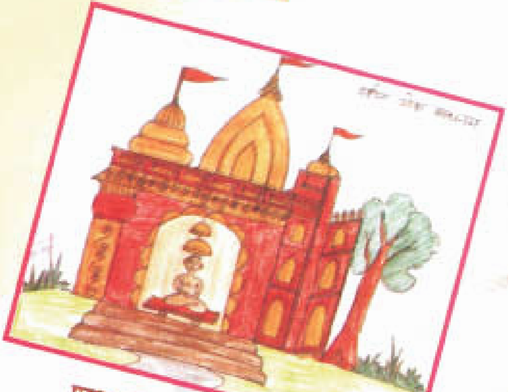

शुभम् पाटनी, इंदौर

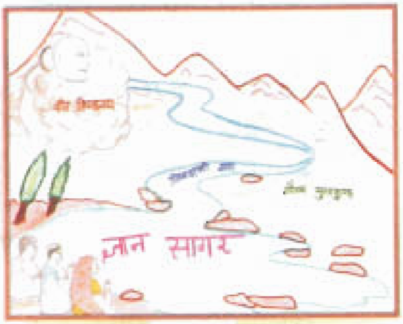

चित्रा जैन, इंदौर

सानिध्य जैन, अहमदाबाद

आपकी चित्रकला

आप किसी भी धार्मिक विषय पर पेंटिंग हमें भेजिये। चयन होने पर उसे यहां प्रकाशित किया जावेगा।

THE SPIRITUAL SUCCESS

Daughter : Ma, What is the ulitimate purpose of human life ?

Mother : The Ultimate purpose of our lives is spiritual upliftment or salvation.

Daughter : Ma, how does one achieve this spititual success ?

Mother : Every one can attain spititual upliftment by faith and knowledge of Jiva-Ajiva and all seven Tattvas as preached by Jina. The seven Tattvas are Jiva (soul), Ajiva (nonliving entities), Asrava (inflow of karma in to the soul), Bandha (Bondage of karma with the soul), Samvara (Stoppage of inflow of karma in to the soul), Nirjara (gradual disintegration of karma from soul), and Moksa (soul becomes free from all karmas). These seven Tattvas are instrumental in the journey of the soul from impure state to the pure state.

Daughter : What are the obstacles in this path ?

Mother : Inflow and bondage of karmic matter are the obstacles in the path of success. The soul of living through the constant action of mind, speech and body. The inflow and bondage of karmic particles lead to misery and sufferings. so, after knowing them well, we should give them up.

Daughter : Ma, so what is ths solution ?

Mother : Stoppage of inflowof karmas and gradual disintegration of accumulated karmic matter lead us to liberation. We should therefore practise them. The need for this two fold action of Samvara and Nirjara provide the basis of Jaina religious practies. These are means to achieve spiritual success, libration of moksa.

My Child, we can further explain this by an example. Imaging a person who wants to cross the river in his boat. He starts rowing and he notices that through few holes in the boat, water starts entering his boat, it makes difficult for him to move further. He plugs the holes and manages to stop he inflow of wate in to his boat but this is not enough as the boat has still lot of water which got collected earlier. With the help of a little vessel, he gets rid of the accumulated water and by subsequent rowing, crosses the river.

In the same manner, a soul desireous of freedom from worldly sufferings and cycles of births and rebirths purifies itself and attains liberation (moksa). In the above example. human life is like the boat. The holes in the boat are our ignorance of seven Tattvas because of which the get accumulated (Bandha). The process of sealing by right removal of the accumulated water in the boat refers to the gradual disintegration of the accumulated karmic particles (Nirjara). Which ultimately leads to liberation (Moksa). like crossing the river.

Presented by : Ku. Sudha Jain, Chhindwara

आपके प्रश्न हमारे उत्तर

यदि आपके मन में किसी भी प्रकार का कोई प्रश्न हो तो आप हमें लिख भेजें हम उसका उत्तर प्रकाशित करेंगे।

1. क्या साबूदाना खाने योग्य है ?

उत्तर - नहीं साबूदाना खाने योग्य नहीं है क्योंकि साबूदाना के निर्माण में अंसख्यात जीवों का घात हो जाता है।

दीपक जैन मुम्बई

2. भगवान की वेदी की परिक्रमा के समय क्या बोलना चाहिए ?

उत्तर - देव स्तुति, भक्ति, स्तोत्र आदि बोलना चाहिए।

शरण मेहता, राजकोट

3. भव्य और अभव्य में क्या अंतर हैं ?

उत्तर - भव्य मोक्ष जा सकता है और अभव्य नहीं।

श्वेता जैन, कोलकाता

4. क्या सम्मेद शिखर अनादि काल से एक ही है ?

उत्तर - हाँ स्थान तो वही रहता है परंतु पर्वत का आकार प्रकार बदल जाता है।

कु. प्रेक्षा जैन, सिहोर

5. छः द्रव्यों में मात्र पुदगल ही क्यों दिखाई देता हैं ?

उत्तर - पुदगल में स्पर्श, रस, गंध, वर्ण गुण पाये जाते हैं अन्य द्रव्य में नहीं। इन गुणों के कारण ही पुदगल ही दिखाई देता है।

सन्मति जैन, हिंगोली

6. भगवान और तीर्थंकर में क्या अंतर है ?

उत्तर - गुणों की अपेक्षा दोनों में कोई भेद नहीं हैं परन्तु तीर्थंकर की समवशरण आदि की विशेषता होती है।

विशुद्ध जैन, कोचीन

बाल-युवा वर्ग के लिये अनुपम उपहार

हमने तो धर्म पाया

प्राप्ति हेतु करें संपर्क -
विवेक जैन
मंगलम् अनेकांत फाउण्डेशन
पहाड़े मेडीकल के बाजु में,
गोलगंज- छिंदवाड़ा (म.प्र.)
94243 74855
07162 - 245624